टिप्पणी

223hi04

4

मध्यकालीन भारत

मध्यकालीन भारत में, धर्म, लोककला तथा भाषा के क्षेत्र में हुए विकास कार्य भारत की संयुक्त संस्कृति के क्रमिक विकास में एक महत्त्वपूर्ण मील के पत्थर साबित हुए। नये धार्मिक आंदोलन जैसे सूफी मत और सिख धर्म ने भी भक्ति आंदोलन के साथ इस प्रक्रिया में अपना योगदान किया। अगर आप चारों ओर देखें तो आपको भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं पर इस्लाम का प्रभाव दिखाई देगा। आपने भारत में कई प्रसिद्ध स्मारक देखे होंगे। ये स्मारक भारत में भारतीय-इस्लामी संस्कृति की सांझी प्रकृति के साक्षी के रूप में खड़े हैं। आप देख सकते हैं कि इस्लाम सहित भारत में विभिन्न धर्मों ने एक दूसरे को प्रभावित किया है। इसके अतिरिक्त भारत का प्रत्येक क्षेत्र किसी न किसी एक लोक कला या दूसरी के विकास के लिए प्रसिद्ध है। लोक कलाओं का विकास भारतीय संस्कृति का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष है जिसके माध्यम से सामान्य जन अपनी सृजनात्मकता को अभिव्यक्त करते हैं। विभिन्न क्षेत्रीय भाषाए जो हम बोलते हैं, उनका भी एक रोचक इतिहास है जिनका विकास इसी युग में हुआ।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने को बाद आप:–

- मध्ययुग के समाज को समझ सकेंगे;
- इस्लाम और सूफी मत के उदय की रूपरेखा प्रस्तुत कर सकेंगे;
- मध्यकाल में भारत की राजनैतिक स्थिति का वर्णन कर सकेंगे;
- भारतीय धर्म पर इस्लाम के प्रभाव का विश्लेषण कर सकेंगे;
- भक्ति आंदोलन के विकास को रेखांकित कर सकेंगे;
- मध्य काल में लोक कलाओं, चित्रकला और संगीत के विकास का परीक्षण कर सकेंगे;

टिप्पणी

- आधुनिक भारतीय भाषाओं के उदय की रूपरेखा प्रस्तुत कर सकेंगे;
- भारत में सिख धर्म के उदय और सिख शक्ति के विषय में विवेचना कर सकेंगे;
- दक्षिणी भारत में विकास कार्यों को रेखांकित कर सकेंगे;

4.1. दिल्ली सल्तनत के अधीन लोगों का जीवन

जब मुस्लिम हमलावर भारत में आए तो उन्होंने भारत को ही अपना घर बनाने का निश्चय किया। उन्होंने अंतर्जातीय विवाह किए और भारतीयों की संस्कृति को अपनाया। विचारों और रीतिरिवाजों का आपसी आदान प्रदान होने लगा। वेशभूषा में, बोली में, व्यवहार में और बौद्धिक दृष्टिकोण में दोनों ने परस्पर एकदूसरे को बहुत अधिक प्रभावित किया। उनमें से कुछ परिवर्तनों का वर्णन आगे किया जा रहा है।

समाज

भारतीय समाज चार प्रमुख वर्गों विशिष्ट वर्ग, पुरोहित वर्ग, पुरवासी और कृषक वर्ग में बटा हुआ था।

विशिष्ट वर्ग

विशिष्ट वर्ग में सुलतान और उसके संबंधी, सामन्त वर्ग, और जमींदार आदि सम्मिलित थे। हिन्दु राजा, प्रधान वर्ग, हिन्दु व्यापारी और महाजन आदि भी इसी वर्ग में थे। इन्होंने सारी शक्ति और सारा धन अपने हाथों में ले लिया। कहना न होगा कि यह वर्ग बहुत शक्तिशाली लोगों का वर्ग था। ये लोग बड़ी शान से ऐशोआराम में जीवन बिताते थे। सुलतान तो इस दौड़ में सबसे आगे होता था। अपनी सर्वोच्चता और अपने पद को बनाए रखने के लिए उसे यह सब करना ही पड़ता था। उसे यह दिखाना होता था कि वह औरों से अलग है। जब कोई नया सुल्तान तख्त पर बैठता, तो मस्जिदों में शुक्रवार की नमाज के समय उसके नाम का खुत्बा या धर्मोपदेश पढ़ा जाता और उसके नाम से सिक्के भी जारी किए जाते। इस प्रकार नया शासक सिंहासन/तख्त पर आरूढ़ होता था। शासक के रूप में उसकी विशेषता बनाए रखने के लिए उसके साथ बहुत से अफसर और नौकर चाकर उसके शाहीमहल में नियुक्त किए जाते जहां वह बड़ी शानोशौकत से रहता था। यहां तक कि सामन्तगण भी उसके जीवनयापन के ढंग की नकल करते और अपने धन का प्रदर्शन करते थे।

पुरोहित वर्ग

समाज में पुरोहित वर्ग दूसरा महत्त्वपूर्ण वर्ग माना जाता था। हिन्दुओं में पुरोहित थे और मुस्लिमों में उलेमा। उन्हें अपने गुज़ारे के लिए कर मुक्त भूमि का अनुदान दिया जाता और

टिप्पणी

अक्सर वे लोग बहुत शक्तिशाली हुआ करते थे। उलेमा मुस्लिम सुल्तानों पर अपना अधि कार जमाते, और अक्सर उनकी नीतियों को भी प्रभावित करते थे पर कुछ अन्य अवसरों पर जैसे अलाउद्दीन खिलजी के राज्य में उनकी बिल्कुल परवाह नहीं की जाती थी। कभी-कभी पुरोहितगण भी धार्मिक कार्यों में रुचि नहीं रखते थे बल्कि सांसारिक क्रियाकलापों में अधिक व्यस्त रहते थे।

पुरवासी

शहरों में अमीर व्यापारी, सौदागर और शिल्पकार रहा करते थे। सरदार, अफसर और सैनिक भी शहरों में रहते थे जो प्रशासनिक और सैनिक केन्द्र हुआ करते थे। जहां सूफी और भक्ति सन्तगण रहते और जहां प्रसिद्ध मंदिर और मस्जिदें बनी हुई होती थीं, वे तीर्थ केन्द्र बन जाते थे। कलाकार अपने विशेष आवासों में रहते थे। वस्तुत: जुलाहे जुलाहों की बस्ती में रहते थे, सुनार सुनारों की बस्ती में रहते थे और अन्य कलाकार भी इसी तरह रहते थे। यह सभी कलाकारों और शिल्पकारों के लिए सामान्य विधान था। ये लोग शाही सामान बनाते थे जो व्यापार के लिए विदेशों को भी भेजा जाता था। शाही कारखाने इन लोगों को खूबसूरत वस्तुएं बनाने के लिए नियुक्त करते थे ये वस्तुएं प्राय: सुल्तानों द्वारा उपहार देने में प्रयोग की जाती थीं।

कृषकवर्ग

कृषक वर्ग तो बहरहाल गांवों में रहते थे और अकसर सबसे बुरी दशा में थे। वे राज्य को भूमिकर के रूप में बड़ी-बड़ी राशि देते थे। राज्य शासन में परिवर्तन का उनके जीवनों पर कोई प्रभाव न पड़ता था। उनका जीवन वैसे ही चलता रहता।

जाति प्रथा बहुत कठोर थी। अंतर्जातीय विवाह और अंतर्जातीय भोज पूरी तरह से निषिद्ध थे लेकिन विचारों का आदान प्रदान बड़े व्यापक स्तर पर होता था। इस्लामधर्म में परिवर्तित हो जाने पर भी वे अपनी पुरानी रीतियों की नहीं भूल पाते। अत: विचारों और रीतिरिवाजों का आदान प्रदान चलता रहा। बहुत से हिन्दु रीति रिवाज मुसलमानों द्वारा अपना लिए जाते और बहुत से मुस्लिम रीतिरिवाज हिन्दुओं द्वारा स्वीकार कर लिए जाते जैसे भोजन, वेशभूषा, वस्त्र, संगीत आदि।

व्यापार

व्यापार बहुत उन्नत था और व्यापार को प्रोत्साहित करने के लिए कई नए शहर बन गए। कुछ समुदाय जैसे वणिक वर्ग, मारवाड़ी और मुल्तानी लोगों ने व्यापार को अपना व्यवसाय बना लिया। बनजारे कारवों के रूप में व्यापार करते और बेचने की वस्तुओं को उठाकर निरन्तर एक स्थान से दूसरे स्थान पर यात्रा करते रहते।

दिल्ली सामान के आयात और निर्यात का केन्द्र थी। पूर्व से चावल, कन्नौज से चीनी, दोआब से गेंहुँ और दक्षिण से बारीक सिल्क आदि सामान आता था। इसी के साथ अन्य शाही वस्तुएँ जैसे धातु की बनी वस्तुएँ, हाथी दाँत, आभूषण, सूती वस्त्र, और अन्य सामान

टिप्पणी

भी आता था। भारत के बाहर जैसे- पूर्वी अफ्रीका, अरब, चीन आदि विदेशों से भी सामान दिल्ली में आता था। इब्न बतूता के अनुसार दिल्ली उस समय एक शानदार शहर था।

व्यापार के विकास ने मुद्रा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया और इस समय चाँदी के टके (सिक्के) प्रयोग में आने लगे। यह उस समय की सर्वाधिक प्रयुक्त मुद्रा थी और इनको इल्तुत्मिश ने जारी किया था। यहाँ तक कि माप तौल के बट्टों की जो व्यवस्था उस समय प्रयोग की गई, वह आधुनिक मीट्रिक प्रणाली के लागू होने तक चलती रही।

धार्मिक वातावरण

जब इस्लाम धर्म भारत में आया तब हिन्दू धर्म ही प्रचलित था। परन्तु इस समय तक हिन्दूधर्म स्वयमेव गिरता जा रहा था। इसे अन्ध विश्वासों, कर्मकाण्डों, बलिप्रथाओं ने घेर रखा था। ब्राह्मण बहुत शक्तिशाली हो गये थे और जाति प्रथा बहुत कठोर हो चुकी थी। जनता, विशेष रूप से निम्न जाति के लोगों के साथ दुर्व्यवहार किया जाता। इस्लाम उन सब के विरुद्ध था जो हिन्दुओं में उस समय प्रचलित था। वे समानता, भ्रातृत्व और एक ईश्वरवाद की बात करते। इस्लाम में कोई हठधर्मिता नहीं थी। इसके विपरीत उनका सीधा सादा सिद्धान्त था और प्रजातान्त्रिक संगठन था।

इस्लाम के आने से देश के राजनैतिक ढाँचे में कोई परिवर्तन नहीं आया। इसकी बजाए इसने समाज के सामाजिक ढांचे को चुनौती दी। इस सम्पर्क का महत्त्वपूर्ण परिणाम हुआ–भक्ति आन्दोलन और सूफी आन्दोलन का उदय। दोनों ही आन्दोलन इस तथ्य पर आधारित थे कि ईश्वर सर्वोच्च है, उसके लिए सभी मनुष्य समान हैं और उसकी भक्ति से ही मोक्ष की प्राप्ति सम्भव है।

4.2 इस्लाम और सूफीवाद का उदय

मुसलमान पहली बार आठवीं शताब्दी में भारत में व्यापारी बनकर आये। वे इस देश के सामाजिक-सांस्कृतिक दृश्यों से मोहित हो गए और उन्होंने भारत को अपना घर बनाने का निश्चय किया। मध्य तथा पश्चिम एशिया से जो व्यापारी भारत आये थे वे अपने साथ भारतीय विज्ञान तथा संस्कृति के ज्ञान को ले गए जिसके फलस्वरूप वे भारत के सांस्कृतिक राजदूत बन गए और इस ज्ञान को इस्लाम के लोगों में तथा वहाँ से यूरोप में चारों ओर फैलाया। आप्रवासी मुस्लिमों ने स्थानीय लोगों के साथ वैवाहिक संबंध बनाने आरंभ किये तथा एकदूसरे की संगति में रहना सीखा! आपस में एकदूसरे के विचारों तथा रिवाजों को अपनाया। हिंदू और मुसलमानों ने एकदूसरे को पहचान, शिष्टाचार बातचीत, रीतिरिवाज तथा बौद्धिक अनुकरण में समान रूप से प्रभावित किया। मुसलमान भी अपना धर्म इस्लाम अपने साथ लाये थे जिसने भारतीय समाज तथा संस्कृति पर गहरा प्रभाव छोड़ा। अब हम इस पाठ में पैगम्बर मोहम्मद तथा इस्लाम के बारे में कुछ और जानेंगे।

पैंगम्बर मोहम्मद ने सातवीं शताब्दी में अरब में इस्लाम धर्म का उपदेश दिया। उनका जन्म अरब के कुरैश जनजाति में 571 ई. शताब्दी में हुआ। वह 622 ई. में मक्का से मदीना आ

टिप्पणी

गए और इससे हिजरी काल की शुरूआत हुई। मुस्लिम आस्था के अनुसार 'कुरान' अल्लाह का दिया गया संदेश है जो उन्होंने फरिश्ते गैब्रियल के द्वारा मुहम्मद तक पहुँचाया था। यह संदेश बहुत सारी भाषाओं में अनूदित किया गया।

इस्लाम के पाँच मुख्य सिद्धांत हैं :

1. तौहीद (अल्लाह में विश्वास)
2. नमाज़ (प्रार्थना, पाँच बार प्रतिदिन)
3. रोज़ा (रमजान के महीने में उपवास)
4. ज़कात (भिक्षा देना)
5. हज़ (मक्का की तीर्थयात्रा करना)

पैगम्बर मोहम्मद की सूक्तियों को हदीना या हदीस मे संजोकर रखा गया। उनकी मृत्यु के बाद खलीफात को स्थापित किया गया। इनके चार धार्मिक खलीफा थे।

इस्लाम में समानता, भाईचारा और ईश्वर के अस्तित्व के विषय में कहा गया है। इसके आगमन से विशेषरूप से भारतीय समाज के पारम्परिक ढांचे (आदर्श) पर गहरा प्रभाव पड़ा। भक्ति तथा सूफी आंदोलनों ने इस कार्य में बहुत ज्यादा योगदान किया। दोनों भक्ति तथा सूफी आंदोलन विश्वास करते थे कि सभी प्राणी एक समान हैं, प्रभु सर्वोपरि है, प्रभु की प्रेम-भक्ति ही एकमात्र मुक्ति पाने का साधन है।

4.2.1 सूफीमत का उदय

'सूफी' पद इस्लामिक रहस्यवाद के लिए प्रयुक्त होता है। सूफी अपनी धार्मिक विचारधारा के प्रति नम्र थे। वे सभी धर्मो की एकता में विश्वास करते थे। वे संगीत के द्वारा आध्यात्मिक प्रार्थनाएँ करते थे और प्रभु के साथ एकत्व का उपदेश देते थे। सूफीमत मूल रूप से ईरान में उदित हुआ और इसने भारत में तुर्की-शासन के अंतर्गत अनुकूल वातावरण पाया। उनकी ईश्वरभक्ति, सहनशीलता, दयाभाव, समानता, मैत्री विचारधारा ने बहुत से उन हिंदुओं को आकर्षित किया जो अधिकतर निम्न वर्ग के थे। इस्लाम में मोइनुद्दीन चिश्ती, निजामुद्दीन औलिया, फरीदुद्दीन गंज-ए-शकर अग्रणी सूफी थे जिनको आज भी भारत में आदर, प्रेम और श्रद्धा से पूजा जाता है।

ईसाई और बौद्ध भिक्षुओं का सूफियों पर प्रभाव पड़ा जब इन्होंने खानकाह तथा दरगाह स्थापित किए। खानकाह संस्थानों (सूफियों का डेरा) ने उत्तरीय भारत के आंचलिक क्षेत्रों में भीतर तक इस्लाम को स्थापित किया।

मज़ार (समाधि) तकिया (मुस्लिम संतों के विश्राम का स्थान) भी इस्लामिक विचारधारा को प्रचार करने के स्थान बन गए। इन केंद्रों को कुलीन वर्ग तथा आमजन दोनों के द्वारा

टिप्पणी

संरक्षण दिया जाता था। सूफी-समस्त प्राणिमात्र को जोर देकर आदर देते थे। सूफियों ने अपनी धार्मिक विचारधारा को क्रम से सिल्सिले के रूप में व्यवस्थित किया। चिश्ती, सुहरावर्दी, कादी तथा नक्शबंदी जैसे संस्थापकों के नाम पर इन 'सिल्सिलों' को नाम दिया गया। आईना-ए-अकबरी के लेखक अबुलफजल के अनुसार सोलहवीं शताब्दी में भारत में ज्यादा से ज्यादा चौदह सिल्सिले थे। इनके अपने खानकाह होते थे जहाँ सूफी संतों को तथा दरिद्रों को विश्राम की जगह मिलती थी। ये बाद में पढ़ने के केंद्र के रूप में विकसित हो गए।

अजमेर, नागौर, अजोधन पाक पट्टन (अब पाकिस्तान में) सूफी मत के महत्त्वपूर्ण केंद्र बन गए। पीरी-मुरादी (गुरु और शिष्य) की परम्परा भी आरंभ हुई। दैवी आनन्द को प्राप्त करने के लिए सूफी लोग कविता तथा संगीत (साम) को सुनते थे जो मूलत: फारसी में था लेकिन बाद में उसे हिंदवी या हिस्दुस्तानी में परिवर्तित कर दिया गया। वे परमात्मा से एकत्व तथा प्रभु के प्रति अपने पूर्ण समर्पण का उपदेश देते थे जैसा कि निर्गुण भक्ति आंदोलन के उपासक करते थे। भाषा की जानकारी न होने पर भी संगीत सभी को आकर्षित करता है। धीरे-धीरे ऐसा संगीत हिन्दुओं को लुभाने लगा और वे बड़ी संख्या में दरगाहों पर जाने लगे। सूफीमत पर हिन्दुत्व का प्रभाव सिद्धों और यौगिक मुद्राओं में देखने को मिलता है।

पाठगत प्रश्न 4.1

1. पैगम्बर मोहम्मद के मदीना से मक्का आकर बसने से किस युग संवत् का आरम्भ माना जाता है?

   .....

2. रोज़ा क्या है?

   .....

3. अपनी सहिष्णुता और सहानुभूति की प्रवृत्तियों के द्वारा हिन्दुमतावलम्बियों को किसने इस्लाम की ओर आकर्षित किया?

   .....

4. आईने-ए-अकबरी के लेखक का नाम लिखिए।

   .....

टिप्पणी

4.3 राजनैतिक पृष्ठभूमि

1206 ई. से 1290 ई. तक दिल्ली के शासक मामलुकतुर्क थे। उनके बाद खिलजी, तुगलक, सैयद और लोदी आए जिन्होंने 1526 ई. तक उत्तर भारत पर दिल्ली से शासन किया। वे सभी शासक सुल्तान कहलाते थे। ये सुल्तान खलीफा या कलीफ की तरफ से प्रदेश में शासन करते थे जो मुस्लिमों में आध्यात्मिक एवं सांसारिक आधार पर प्रधान माना जाता था। खलीफा और सुल्तान दोनों के नाम से स्थानीय इमाम खुतबा (शुक्रवार की प्रार्थना) पढ़ा करते थे।

1526 ई. में दिल्ली के सुल्तानों को हटाकर मुगल शासक बने जो आरंभ में आगरा से और बाद में 1707 ई. तक दिल्ली से शासन करते थे। इसके बाद मुगलों ने 1857 तक नाममात्र का शासन किया जब उनका राजवंश समाप्त हो गया। मुगलों ने पदासीन होने के लिए खलीफाओं से कुछ नहीं कहा लेकिन उनको भेंट देना ज़ारी रखा। वे अपने नाम से खुतबा पढ़वाते थे।

तदुपरान्त क्षेत्रीय अफगान शासक शेरशाह ने मुगल शासक हुमायुँ को ललकारा और उसे दिल्ली की गद्दी से लगभग पन्द्रह वर्ष (1540 ई. - 55 ई.) तक दूर रखा। शेरशाह के शासन काल में अनेक असाधारण उपलब्धियाँ हुईं। उसने अनेक सड़कों का निर्माण करवाया जिनमें महत्त्वपूर्ण कार्य सड़क-ए-आजम या ग्रांड ट्रंक रोड है जो सोनार गांव (अब बंगलादेश में) से अतोक (पाकिस्तान में) तक तथा दिल्ली और आगरा से होती हुई 1500 कि.मी. की दूरी तय करती थी। आगरा से बुरहानपुर, आगरा से मारवाड़ तथा लाहौर से मुल्तान तक सड़कें बनवाईं। उसने सोने, चांदी तथा कांस्य में सुन्दर सिक्के बनवाये जिनकी मुगल राजाओं ने बाद में नकल भी की।

1556 ई. -1605 ई. तक मुगल शासक अकबर ने राज्य किया जो भारत के इतिहास में एक महान शासक था। इन्होंने अपनी प्रजा में जाति पाँतिगत, धार्मिक और सांस्कृतिक भेदभाव मिटाकर मिलजुल कर रहने की भावना का अन्त:करण से प्रचार किया। इन्होंने हिंदुओं के साथ मैत्री संबंधों को विकसित करने का प्रयत्न किया। अपनी साम्राज्यसंबंधी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए राजपूत शासकों के साथ वैवाहिक संबंध बनाने आरंभ किये। अकबर का, देश में राजनैतिक एकरूपता स्थापित करने में तथा प्रशासन की एक समान व्यवस्था सहित एक शक्तिशाली केन्द्रीय शासन स्थापित करने में बहुत बड़ा योगदान रहा अकबर कला, वास्तुकला तथा ज्ञान का संरक्षक था। धर्म निरपेक्ष मन वाले शासक के रूप में उसने एक नया धर्म/मत दीन-ए-इलाही आरंभ किया जिसमें विभिन्न धर्मो के विचार सम्मिलित थे। प्रत्येक गुरुवार को विभिन्न धर्म वाले विद्वान सम्राट द्वारा उठाये गये धार्मिक विषयों पर वाद-विवाद करते थे। आगरा में फतेहपुर सीकरी में इबादत-खाना का निर्माण करवाया। निरक्षर होते हुए भी अकबर विद्वानों और ज्ञानशील लोगों को संरक्षण देता था। उसके दरबार में मुल्ला दो प्याजा, हकीन हुमाम, अब्दुर्रहिम खान ए खाना, अब्दुल तायल, तानसेन, राजा टोडरमल, राजा मानसिंह, फैजी और बीरबल जैसे नो नवरत्न थे।

अकबर की उदारवादी, सहनशीलता वाली नीति को उसके वारिस जहाँगीर तथा शाहजहाँ ने जारी रखा जबकि औरंगजेब ने इस नीति को पूरी तरह त्याग दिया। औरंगजेब की

टिप्पणी

अदूरदर्शी नीतियाँ और देश में हर तरफ निरंतर युद्ध के कारण (विशेषत: दक्षिण भारत में) मुगल साम्राज्य के विघटन का कारण बनीं।

दक्षिण में मराठों का उदय, नादिरशाह और अहमद शाह अब्दाली के आक्रमण, दरबार में सामंतवर्ग में अशान्ति तथा उत्तर पश्चिम भारत में सिखों के उदय के कारण जो कुछ मुगलशक्ति बची थी वह भी नष्ट हो गई। अर्थव्यवस्था के क्षेत्र में भारत तब तक भी संसार का बहुत बड़ा निर्यातक था और यहाँ अतुलित धन राशि थी लेकिन इस आधुनिकीकरण की प्रक्रिया में सब कुछ पीछे छूट गया।

4.4 सांस्कृतिक विकास

इस समय के शासकों ने कला तथा वास्तुकला के क्षेत्र में बहुत ज्यादा रुचि दिखाई! मध्ययुगीन काल की मिश्रित सांस्कृतिक विशेषता इन क्षेत्रों में स्पष्ट झलकती है। वास्तुकला की एक नई शैली इण्डो-इस्लाम शैली इस मिश्रण से पैदा हुई। इण्डो-इस्लामिक-शैली के विशेष लक्षण थे–(क) गुम्बद, (ख) ऊंची मीनारें, (ग) मेहराब (घ) तहखाना (गुफा)।

मुगल शासक प्रकृति के बहुत बड़े प्रेमी थे। वे सुंदर किले, उद्यान आदि बनाने में अपना समय व्यतीत करने में आनन्दित होते थे। प्रसिद्ध मुगल गार्डन, जैसे शालीमार बाग तथा निशात बाग हमारी सांस्कृतिक विरासत के महत्त्वपूर्ण तत्व हैं। इन उद्यानों के आसपास बहते पानी की नहरें और फब्बारे हैं और इसके साथ इन उद्यानों में सीढ़ीनुमा कई स्तर हैं। पानी जब एक चबूतरे से दूसरे चबूतरे पर गिरता है तो वे झरने जैसे छोटी नदी की जलधारा में मिल जाते हैं, जिसके नीचे की रोशनी पानी में झिलमिलाती है और सारे वातावरण में एक विशेष सौन्दर्य आ जाता है। इसके अतिरिक्त पानी के बहाब के लिए पत्थरों को छीलछीलकर फिसलने वाली परतें बनाई गयी हैं जिन पर बहता पानी जगमग करता है। इस का सर्वश्रेष्ठ उदाहरण लाहौर का शालीमार गार्डन (अब पाकिस्तान में) है। लाहौर गार्डन में तीन (एक दूसरे से ऊपर उठते हुए) चबूतरें हैं। लेकिन भारत के पिंजौर गार्डन में इससे भी बेहतर उदाहरण देखा जा सकता है जो चण्डीगढ़ कालका मार्ग पर स्थित है जहाँ उस गार्डन में सात चबूतरे हैं। इससे ब्रिटिश लोग इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने नई दिल्ली में वाइस-रीगल-लॉज (अब राष्ट्रपति भवन) में तीन चबूतरे बाला उद्यान बनवाया। बीसवीं शताब्दी में मैसूर में इसी प्रकार का प्रसिद्ध 'वृन्दावन गार्डन' बनाया गया।

इन दिनों संगमरमर पर पत्रादूर अर्थात् रंगीन पत्थरों से पच्चीकारी की जाती थी जो शाहजहां के समय में बहुत प्रसिद्ध थी। इसलिए दिल्ली में 'लालकिला' और आगरा में 'ताजमहल' में इस कारीगरी का सर्वोत्तम स्वरूप देखा जा सकता है। इसके अतिरिक्त फतेहपुर सीकरी परिसर के भवन, लाहौर और आगरे का किला, लाहौर और दिल्ली में शाही मस्जिद आदि हमारी महत्त्वपूर्ण विरासत के अंश हैं। उस समय में बनी मस्जिदें, राजाओं की कब्रें और दरगाहें पृथ्वी पर अनोखा सौन्दर्य प्रस्तुत करती हैं।

सिक्के

कला का एक अन्य महत्त्वपूर्ण पक्ष है 'सिक्कों का अध्ययन' (न्यूमिसमेटिक्स) जो हमारे लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है और जो इतिहास के किसी भी काल के विषय में महत्वपूर्ण

टिप्पणी

जानकारी प्रदान करता है। मुस्लिम शासकों के सिक्के ऐतिहासिक दृष्टि से बहुत ही मूल्यवान हैं। उनका डिज़ाइन, खुदाई और टकसाल के चिह्न हमें इस काल के विषय में बहुत रोचक सूचनाएँ प्रदान करते हैं। शाही उपाधियों से, टकसालों के नामों और स्थानों से हम शासन के साम्राज्य के विस्तार और उसकी स्थिति के विषय में जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। मुहम्मद तुगलक के सिक्के दिल्ली, दौलताबाद और अन्य कई प्रान्तों की राजधानियों में ढाले जाते थे और उनके कम से कम पच्चीस प्रकार के विभिन्न डिजाइन उपलब्ध थे। सिक्कों पर खुदे कुछ वाक्य बड़े रोचक हैं। ईश्वर के नाम का योद्धा और जो सुल्तान की आज्ञा मानता है, वह दयावतार का कहना मानता है आदि कुछ उदाहरण हैं।

पाठगत प्रश्न 4.2

रिक्त स्थान भरें–

1. खलीफा और सुल्तान के नाम ..... पढ़े जाते थे।
2. ..... स्थानीय अफगान शासक ने मुगल शासक हुमायुँ को ललकारा और उसे दिल्ली की गद्दी से 15 वर्ष तक दूर रखा।
3. अकबर ने अपनी साम्राज्यवादी महत्त्वाकांक्षा को पूरा करने के लिए ..... शासकों के साथ वैवाहिक संबंध बनाए।
4. ब्रिटिश शासन के दौरान नई दिल्ली का राष्ट्रपति भवन ..... के नाम से जाना जाता था।
5. संगमरमर पर रंगीन पत्थरों से पच्चीकारी करना (जड़ना) ..... के दिनों में बहुत प्रसिद्ध हो गया था।

4.5 भक्ति आन्दोलन

सूफी सन्त ही उस समय के लोकप्रिय धार्मिक गुरु नहीं थे। बल्कि भक्ति काल के सन्त भी थे। उनकी शिक्षाएँ भी सूफी सन्तों के समान ही थी परन्तु वे एक लम्बे समय से प्रचार कर रहे थे। वे शहरों में कलाकारों, शिल्पकारों और व्यापारियों के बीच प्रसिद्ध थे। गाँवों में भी लोग उनको सुनने के लिए एकत्रित होते थे।

सूफी सन्तों और भक्ति सन्तों के कई उपदेशों और आचरणों में समानता थी। उनका सर्वाधिक विश्वास था ईश्वर के साथ तादात्म्य स्थापित करना। वे ईश्वर के साथ सम्बन्ध का आधार प्रेम या भक्ति को मानते थे। इसी तरह तादात्म्य को प्राप्त करने के लिए गुरु या पीर की आवश्यकता होती थी।

भक्ति सम्प्रदाय के सन्तों ने धर्म में कट्टरता का और मूर्त्तिपूजा का विरोध किया। उन्होंने जाति प्रथा की उपेक्षा की और स्त्रियों को अपने धार्मिक सम्मेलनों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते थे। भक्ति सन्त अपने उपदेश देसी भाषा में देते थे जिससे सामान्य बुद्धि वाला भी उसे सरलता से समझ सके।

भक्ति सन्त विभिन्न पृष्ठभूमियों से जुड़े होते थे विशेषकर निम्न जातियों से। कुछ तो मूल रूप में कलाकार होते थे या समृद्ध वर्ग से होते थे। वे सभी मानवों में और धर्मों में सहनशक्ति की आवश्यकता पर बल देते थे।

भक्ति आन्दोलन दक्षिण में तो लम्बे समय से प्रचलित था। सूक्तों और कथाओं के माध्यम से भक्ति का प्रचार कार्य पर परम्परागत विधि से तमिल भक्ति सम्प्रदाय के आलाबर और नयनार सन्तों ने किया। आप इसी पुस्तक में इनके विषय में बाद में पढ़ेंगे।

गुरुनानक

गुरुनानक का जन्म एक खत्री परिवार में तलवंडी गांव में हुआ जिसे आज ननकाना साहब कहा जाता है। यद्यपि गुरुनानक लेखा जोखा (accountancy) में प्रशिक्षित थे, पर उन्हें सूफी और सन्तों की संगति प्रिय थी। कुछ दिनों के बाद, उन्हें एक दिव्य दर्शन हुए। उन्होंने पीर और सन्तों की संगति के लिए घरबार छोड़ दिया। उन्होंने दोहे बनाए और उन्हें रबाब के साथ जो एक संगीत वाद्य है, गाया करते थे। उनके पद आज भी लोकप्रिय हैं उन्होंने एक मात्र ईश्वर के प्रति भक्ति और प्रेम पर बल दिया। मूर्त्ति पूजा, तीर्थयात्राओं, यज्ञों और कर्मकाण्ड आदि का ईश्वर को प्राप्त करने के मार्ग के रूप में जोर शोर से विरोध किया। वह चरित्र और शील को ईश्वर के पास जाने की पहली शर्त मानते थे। वह विश्वास करते थे कि कोई भी मनुष्य एक गृहस्थ के रूप में भी अपने कर्तव्य का पालन करते हुए आध्यात्मिक जीवन को प्राप्त कर सकता है।

रामानुज

रामानुज दक्षिण भारत से थे और वे सामान्य जनता की भाषा में उपदेश करते थे। उनके शिष्य रामानन्द थे जिन्होंने अपने गुरु के संदेश को पूरे उत्तरी भारत में फैलाया।

रामानन्द

रामानन्द का जन्म इलाहाबाद में हुआ और शिक्षा दीक्षा वाराणसी में हुई। उन्होंने दोनों स्थानों पर उपदेश दिए। वह हिन्दू धर्म से कुरीतियों और बुरे रिवाजों को दूर करना चाहते थे। वह लोगों को समझाते थे कि सभी

मनुष्य ईश्वर की दृष्टि में समान हैं और कोई भी जन्मजात ऊंचा या नीचा नहीं होता। उनके अनुयायियों में सभी स्तर के लोग होते थे। जैसे कबीर एक जुलाहा था, साधना कसाई, रविदास चमार और सेन नाई था।

कबीर

कबीर रामानन्द के प्रिय शिष्य थे। नानक के समान वे भी वर्तमान सामाजिक व्यवस्था की आलोचना करते थे और हिन्दू-मुस्लिम एकता पर बल देते थे। एक मुस्लिम जुलाहे के पुत्र, कबीर मूर्तिपूजा के तथा औपचारिक पूजा विधि जैसे नमाज पढ़ना, तीर्थयात्रा या नदियों में स्नान करना आदि के सख्त विरोधी थे। वह ऐसे धर्म का उपदेश करना चाहते थे जो सभी को स्वीकार्य हो, और जो सब धर्मों को जोड़ सके। उन्होंने एकेश्वरवाद पर बल दिया। वे उन्हें कई नामों से पुकारते थे- जैसे राम, गोबिन्द, हरि और अल्लाह। आपने हिन्दी में उनके दोहे पढ़े होंगे।

चैतन्य महाप्रभु

चैतन्य बंगाल के सन्त थे। वह भगवान कृष्ण के भक्त थे। यद्यपि वे ब्राह्मण थे, उन्होंने जाति व्यवस्था का विरोध किया और सबकी समानता पर बल दिया। वे सभी को बताना चाहते थे कि सच्ची पूजा तो प्रेम और भक्ति में ही निवास करती है। वह भगवान कृष्ण की स्तुति में भक्ति गीत गाते गाते बेसुध हो जाया करते थे।

मीराबाई

मीराबाई एक अन्य भक्ति सन्त थी जिन्होंने भगवान कृष्ण की पूजा की, और उनकी स्तुति में गीत रचे और गाये। चैतन्य के समान वे भी ईश्वर के प्रेम में खो जाती थीं।

नामदेव

नामदेव एक नाई थे। उन्होंने मराठी में लिखा। उनकी कविता में ईश्वर के प्रति प्रेम और गहरी श्रद्धा झलकती थी।

टिप्पणी

भक्ति आन्दोलन की लोकप्रियता

भक्ति आन्दोलन लोगों में कैसे इतना लोकप्रिय हो गया? इसका एक महत्त्वपूर्ण कारण था कि इन्होंने जाति व्यवस्था का विरोध किया और ब्राह्मणों की श्रेष्ठता को चुनौती दी। उन्होंने समानता और भ्रातृत्व के विचारों का स्वागत किया जिसका प्रचार सूफी सन्तों ने भी किया। लोग प्रचलित धर्म से अब सन्तुष्ट नहीं थे। वे एक ऐसा धर्म चाहते थे जो विवेक और भावनाएँ दोनों को ही सन्तुष्ट कर सके।

सभी भक्त सन्तों ने एकेश्वरवाद पर बल दिया। उन्होंने कहा कि ईश्वर प्राप्ति का एक ही मार्ग है भक्ति, न कि कोई अन्य कर्मकाण्ड। उन्होंने कर्मकाण्ड और यज्ञों की निन्दा की।

उत्तरी भारत में यह आन्दोलन दो धाराओं में बंट गया- निर्गुण भक्ति और सगुण भक्ति। निर्गुण भक्त एक निराकार ईश्वर के भक्त थे और उन्हीं को राम, गोविन्द, हरि, रघुनाथ आदि अनेक नामों से पुकारते थे। इनमें कबीर और नानक सर्वाधिक प्रमुख थे। सगुण के उपासक भक्त दशरथ पुत्र राम की अथवा वासुदेव और देवकी पुत्र कृष्ण की पूजा करते थे।

सगुण भक्तों में कुछ प्रसिद्ध उदाहरण थे तुलसीदास जिन्होंने राम को अपने रामचरितमानस में देवत्व प्रदान किया तथा सूरदास जिन्होंने अपने प्रसिद्ध सूरसागर में कृष्ण की स्तुति गाई। रसखान एक मुस्लिम कवि, जो भगवान कृष्ण का भक्त था, वह भी इसी धारा का उपासक था।

भक्ति आंदोलन का पहला आवश्यक लक्षण था एकेश्वरवाद की अवधारणा और सभी मानवों में भ्रातृत्व की भावना। यह आंदोलन व जाति या लिंग के आधार पर किसी से भेदभाव नहीं करता।

इसका दूसरा लक्षण था ईश्वर के प्रति पूर्व समर्पण जो सर्वव्यापक है और भक्तों की सभी समस्याओं को दूर करने में सक्षम है।

भक्ति का तीसरा महत्त्वपूर्ण लक्षण था परमात्मा के प्रति गहरा व्यक्तिगत समर्पण का भाव जिसमें एक अच्छे नैतिक जीवन पर बल दिया जाता है। यह अनुभव किया गया कि भगवान के नाम का निरंतर जाप आत्मा को पवित्र करता है और मनुष्य को उसकी कृपा का पात्र बनाता है। एक सच्चा भक्त न स्वर्ग चाहता है न मोक्ष। वह तो केवल बार बार ही भगवान के नाम का स्मरण करना चाहता है जिससे बार बार पुनर्जीवन प्राप्त कर उस ईश्वर का स्तुतिगान कर सके।

इसके अतिरिक्त गुरु या आध्यात्मिक शिक्षक जिनका काम था लोगों में आशा, शक्ति और हृदयों में उत्साह का संचार करना। वह ऐसा व्यक्ति होता था जो भक्ति के मार्ग पर सबका अग्रणी होता था और संभवत: उसने ईश्वर का साक्षात्कार भी किया होता था। अत: वह

टिप्पणी

सबको ईश्वर का मार्ग दिखाने में सक्षम होता था। इससे पाहुल व्यवस्था का जन्म हुआ। पाहुल वह पवित्र जल होता था जो एक गुरु अपने शिष्य को उसे ईश्वर के मार्ग पर चलने के लिए चुनकर प्रदान करता था। सिख खड्ग धोने की रस्म निभाते थे जिसे खाण्डे का पाहुल कहते थे जिससे पीरमुरीदी व्यवस्था को जीवन्त किया जाता था। (साधु-सैनिक अवधारणा)

क्या आपने भक्ति परम्परा के कुछ लक्षण ऐसे भी देखे हैं जो सूफियों के विचारों और क्रियाकलापों के समान हों।

भक्ति की लहर सम्पूर्ण भारत में फैल गई और इसका सजीव और सुन्दर वर्णन मध्यकालीन सन्तों और फकीरों की धार्मिक रचनाओं में अभिव्यक्त हुआ चाहे वे किसी भी धर्म में विश्वास करते हों। उभरी साहित्यिक रचनाएं गीत कव्वाली आदि ने लोगों को एक सूत्र में बांध दिया, जो कार्य किसी दूसरी विधि से नहीं हो सकता था। इसने प्रान्तीय भाषाओं के विकास को भी प्रोत्साहित किया।

पाठगत प्रश्न 4.3

निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर दें–

1. भक्ति आंदोलन की दो प्रमुख धारायें कौन-कौन सी हैं?

   .....

2. किसी एक महत्त्वपूर्ण निर्गुण और एक सगुण भक्ति कवि का नाम लिखें।

   .....

4.6 लोककलाओं का विकास

ग्रामीण जनता को कई क्षेत्रों में अपने रचनात्मक कौशलों को प्रस्तुत करने के अवसर मिले। भूमि को जोतने, फसल बोने, कपास चुनने, गुड़ाई निराई जैसे कृषि संबंधी क्रिया-कलाप और कुछ अन्य सामाजिक समारोह ग्रामीणों के लिए नाचने गाने के अवसर बन गए। क्या यह सब आपको परिचित सा नहीं लगता। जी हां, जो त्योहार और रस्में आप आज मनाते हैं, वे प्राचीन काल से आज तक कुछ अपेक्षित समयोचित परिवर्तनों के साथ विद्यमान हैं।

वर्षा का आगमन नाचने और खुशियां मनाने के अवसर बन गये। मंदिरों में देवताओं का आह्वान किया जाता और विशेष पूजा का आयोजन होता। यह झूले झूलने का भी अवसर होता था। इसी प्रकार महिलाएं अन्य महिलाओं के साथ अपने-अपने चरखे लेकर बैठ जाती थीं और देर रात तक गाती रहती थीं। भारत के गांव गांव में यह एक आम दृश्य होता था।

यह भी ध्यान देने योग्य बात है कि प्राय: प्रत्येक क्षेत्र ने अपनी अपनी विशेष नृत्यशैली विकसित की जिसमें स्थानीय तत्त्वों का पुट था। इस प्रकार गरबा, कालबेलिया, भांगड़ा, गिद्‌दा, बांस नृत्य, लावणी और असंख्य अन्य नृत्य अस्तित्व में आए। आज इनमें से कुछ नृत्य तो गणतंत्र दिवस समारोह एवं अन्य उत्सवों पर भी प्रदर्शित किए जाते हैं।

औपचारिक शिक्षा महिलाओं के लिए आवश्यक नहीं समझी जाती थी परन्तु इससे उन्हें अन्य क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा को प्रदर्शित करने से कोई रोक नहीं सका। उन्होंने अपनी सृजनात्मकता सिलाई में दिखाई, राजस्थान में लड़कियों ने ओढ़नियों, कमीजों और घाघरों पर सुन्दर डिजाइन बनाने की कला सीखी। राजस्थानियों ने टाई और डाई (बंधेज) की कला शैली से पुरुषों और स्त्रियों के वस्त्रों पर खूबसूरत डिजाइन बनाए। आज भी भारत में राजस्थानी लोग सबसे अधिक रंग बिरंगे कपड़े पहने दिखाई देते हैं। उनकी उदारता उनके घोड़ों, बैलों, ऊटों आदि हाथियों को सजाने में दिखाई देती है। पंजाब में लड़कियां खुबसूरत फुलकारी का काम करती हैं। लखनऊ में और उसके आस पास कमीजों, सलवारों, ओढ़नियों और यहाँ तक कि साड़ियों पर भी चिकन का काम किया जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि जिन नाटककारों के विषय में भरत ने अपने नाट्यशास्त्र (पांचवी शताब्दी ई पश्चात्) में वर्णन किया है, वे पूरी तरह लुप्त नहीं हुए। महाराष्ट्र में तमाशा और लावनी नृत्यशैली विकसित हुई, मध्य भारत में पण्डवानी और उत्तरी भारत में मिरासियों ने थोड़ा बहुत परिवर्तन के साथ इन विशिष्ट नृत्यशैलियों को विकसित किया। इसी प्रकार कठपुतलीवालों, स्तुति गायकों और स्वांग रचने वालों ने जगह जगह घूम कर कई प्रकार से लोगों का मनोरंजन किया। कलाबाजों और बाजीगरों को भी एक स्थान से दूसरे स्थान पर घूमते हुए देखा जा सकता है। कुछ क्षेत्रों में युद्धकलाओं का भी विकास हुआ और कुश्ती तो पूरे भारत में भी अति प्राचीन काल से ही लोकप्रिय है।

पाठगत प्रश्न 4.4

1. किन्हीं दो लोकनृत्यों के नाम लिखिए।

   ....

2. भारत में विकसित किसी एक कढ़ाई के काम का नाम बताइए।

   ....

4.7 चित्रकला

एक अन्य क्षेत्र जिस पर इस्लाम का प्रभाव पड़ा वह है चित्रकला। हुमायुं ने बारह वर्ष से भी अधिक समय फारस में शरणार्थी के रूप में बिताया। जब 1555 ई. में एक बार फिर वह दिल्ली का शासक बना तो वह अपने साथ भारत में चित्रकारों को भी लाया। उनमें से

टिप्पणी

प्रसिद्ध थे मीर सैयद अली और अब्दुस समद जिन्होंने पाण्डुलियों को चित्रित करने की परम्परा को विकसित किया। इसका एक उदाहरण है दास्ताने अमीर हम्जा जिसमें लगभग 1200 चित्र हैं। इसी काल में आकृति चित्र और सूक्ष्म चित्रकला भी विकसित हुई। तथापि आश्चर्यजनक बात यह है कि इनमें कुछ कलाकारों ने शास्त्रीय रागों को चित्रित करने का प्रयत्न किया और इसी प्रकार उन्होंने शास्त्रीय राग जैसे पूर्णतया अमूर्त विचारों को रूप और रंग प्रदान किया। मौसम बारहमासी चित्र भी इसी प्रकार कलात्मक रूप में चित्रित किए गए। क्या तुम इन कलाकरों की सृजनात्मकता का अनुमान लगा सकते हो? विश्व में कहीं पर भी शायद चीन को छोड़कर कहीं भी अन्यत्र चित्रकारों ने संगीत या ऋतुओं को चित्रित करने का प्रयत्न नहीं किया।

अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने इन कलाकारों को संरक्षण देना जारी रखा और परिणामस्वरूप चित्रकला की मुगल शैली पनपती रही। एक उदार शासक के रूप में अकबर ने अपना संरक्षण चित्रकला को भी प्रदान किया। उसने दासवंत और बसावन लाल जैसे अनेक हिन्दु चित्रकारों को नियुक्त किया। परिणामस्वरूप पारसी और भारतीय शैलियों का उसके समय में मिश्रण हुआ। भारतीय चित्रकला पर यूरोपीय प्रभाव भी दिखाई पड़ने लगा।

जहांगीर के शासनकाल में मुगल चित्रकला अपने चरमोत्कर्ष पर पहुंच गई। वह स्वयं भी एक उत्तम चित्रकार था। उसका दरबार अनेक प्रसिद्ध चित्रकारों जैसे उस्ताद मंसूर और अबुल हसन से विभूषित था। मंसूर सूक्ष्म चित्रकारी के लिए प्रसिद्ध था। लेकिन अपने संकीर्ण विचारों और राजनैतिक व्यस्तताओं के कारण औरंगजेब ने संगीत और चित्रकला को संरक्षण देना बंद कर दिया। अपने बादशाहों के समान कुछ राजकुमारों ने भी चित्रकारों को अपना संरक्षण प्रदान किया। अत: मुगल शैली के अतिरिक्त राजपूत और पहाड़ी चित्रकला शैलियों को भी प्रोत्साहित किया, यहां तक कि समाज के सम्भ्रान्त लोगों ने भी चित्रकारों को संरक्षण देना प्रारंभ कर दिया। परिणामस्वरूप अमीरों की बड़ी बड़ी हवेलियां और मंदिर भी खूब सजाए जाने लगे। राजस्थान में ये हवेलियाँ आज भी अनेकों पर्यटकों को आकर्षित करती हैं। आप भी कभी राजस्थान जाने का अवसर प्राप्त करें तो इन हवेलियां को देख सकते हैं।

मुगल शैली (16वीं से 18वीं शताब्दी) ने भारतीय-फारसी शैली की लघुचित्र कला को विकसित किया। मुगल दरबार के चित्रकारों ने चेहरों, मानव आकृतियों और वेशभूषा के चित्रण सहित दृश्यों के चित्र बनाने आरम्भ किए। जब वे पारम्परिक भारतीय शैलियां के सम्पर्क में आए तो उनमें और अधिक स्वाभाविकता आ गई। लघुचित्रों पर हस्ताक्षर करने का चलन भी प्रारम्भ हुआ। चित्रकारों को अब मासिक वेतन पर नियुक्त किया जाता था। उन्होंने कई महत्त्वपूर्ण रचनाओं के लिए चित्र बनाए–चंगे, जफरनामा और रामायण

4.8 संगीत

मुगल बादशाह अकबर, जहाँगीर और शाहजहाँ ने बहुत सारे संगीतज्ञों को संरक्षण दिया। तानसेन जो अकबर के दरबार की शोभा थे, उन्होंने न केवल शास्त्रीय राग गाये बल्कि

नये-नये रागों की बंदिश की। ऐसा कहा जाता है कि शाहजहाँ स्वयं एक बहुत अच्छा गायक था। ये संगीतज्ञ दिन में विभिन्न समय और मौसम में बादशाहों का मनोरंजन उपयुक्त उचित रागों से किया करते थे।

भारत में तुर्क-अफगान राज्य के समय में इण्डो-ईरानी संगीत के मिश्रित रूप का आरंभ हुआ। मुगल शासनकाल में यह और अधिक विकसित हुआ। यह जानना दिलचस्प होगा कि औरंगजेब संगीत का विरोधी था लेकिन उसके शासन काल में ही भारतीय शास्त्रीय संगीत की फारसी में अनेक पुस्तकें लिखी गई। उत्तर भारत में विशिष्ट हिन्दुस्तानी संगीत स्कूल अलग से जाना गया और इस संगीत ने जीवन के अलग-अलग भावों के लिए मधुर और हर्षोन्मत्त धुनें बनाईं। इन्हीं के आधार पर राग रागिनियों की रचना की गई। राग और रागिनी अपने व्यक्तित्व के अनुसार प्रस्तुत किए। ख्याल, ठुमरी और गजलों का भी इस समय में विस्तार हुआ। तानसेन इस स्कूल के मार्गदर्शक थे। इस प्रकार दक्षिण में संगीत की कर्नाटक शैली विकसित हुई। यद्यपि आल्हा-ऊदल, दूल्हा भट्टी, जयमाल-फट्टा आदि जैसे स्थानीय मुख्य व्यक्तियों की स्मृति में उत्सव मनाने के लिए सामान्य जन लोकसंगीत तथा लोकगीतों को गाया बजाया करते थे।

इण्डो-मुगल संस्कृति

मुगल शासकों ने अफगान उपाधि 'सुल्तान' को रद्द कर दिया और अपने आपको 'बादशाह' (राजा) तथा दीन-ए-पनाह (विश्वास के रक्षक) कहलवाने लगे। सम्राट के प्रति प्रजा में सम्मान भाव जगाने के लिए, इन्होंने झरोखा-दर्शन या विशेषरूप से बनी खिड़कियों में सामान्य जनता को दर्शन देने की प्रथा आरंभ की। इन्होंने अपने दरबार में 'सज़्दा' यानि (राजा के सामने नतमस्तक) होने की प्रथा आरंभ की तथा समस्त धार्मिक एवं राजनैतिक ताकत को मजबूती से अपने हाथ में कर लिया।

4.9 आधुनिक भारतीय भाषाओं का उदय

इस काल का दूसरा महत्त्वपूर्ण विकास अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओं के उदय के रूप में हुआ। उर्दू शायद दिल्ली के आसपास उत्पन्न हुई। उर्दू का विकास अलाउद्दीन खिलजी की सेना में शिविर की भाषा के रूप में हुआ जब वे करीब चौदहवीं शताब्दी में दक्खन में नियुक्त किए गए। वास्तव में दक्खन में बीजापुर और गोलकुण्डा उर्दू साहित्य का विकास स्थल बन गए। इस भाषा ने शीघ्र ही अपना व्याकरण विकसित किया और यह एक विशेष भाषा बन गई।

जैसे-जैसे समय व्यतीत होता गया, शिष्ट वर्ग इसका प्रयोग करने लगा। प्रसिद्ध कवि 'अमीर खुसरो' ने इस भाषा में कविताएँ रचीं और इसे लोकप्रिय बनाने में कुछ योगदान किया। अठारहवीं और उन्नीसवीं शताब्दी के समय में उर्दू में कविता, सुंदर गद्य, लघु कहानी, उपन्यास तथा नाटक आदि भी लिखे गए। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रथम आधे अंश में उर्दू पत्रकारिता ने स्वतंत्रता संग्राम में महत्त्वपूर्ण कार्य किया।

टिप्पणी

उर्दू के साथ-साथ लगभग अन्य सारी आधुनिक भारतीय भाषाएँ जैसे बंगाली, असमी, उड़िया, खड़ी बोली, पंजाबी, मराठी, सिन्धी, कश्मीरी तथा चार दक्षिण भारतीय भाषाएँ तमिल, तेलगु, कन्नड़ एवं मलयालम भी इस काल में अपने वर्तमान आकार में विकसित हुईं।

4.10 नये धर्म

इस समय में दो नये धर्म भारत में विकसित हुए सिखधर्म तथा पारसी धर्म– इसके अतिरिक्त भारत में धर्मों में सुधार करने के लिए कई सुधार आंदोलनों का प्रारम्भ हुआ।

सिख धर्म

सिख जो अधिकतर पंजाब के निवासी हैं, हमारे देश की जनसंख्या का बहुत बड़ा हिस्सा हैं। रूढ़ीवादी सिख विश्वास करते हैं कि उनका धर्म परमात्मा के द्वारा गुरु नानक को प्रदान किया गया जिसमें उनकी आत्मा रहती थी, और तदनन्तर यही भाव 'दसवें गुरु' गुरु गोविंद सिंह तक बना रहा, जिन्होंने सिखों को 'आदि ग्रंथ' जो 'गुरुग्रंथ साहब' नाम से लोकप्रिय है, उनको गुरु मानने का निर्देश दिया।

लेकिन इतिहास और धर्म के विद्यार्थी मानते हैं कि इस धर्म का बीज तो भक्ति आंदोलन के समय ही उसकी निर्गुण शाखा में उपस्थित था।

सिख, मुख्यरूप से निराकार प्रभु में विश्वास करते हैं, समस्त प्राणियों को एक समान मानते हैं, गुरु की अनिवार्यता, और पाहुल परंपरा में विश्वास करते हैं। कभी-कभी गुरूपदवी अपने पुत्र को या कभी कभी अपने सबसे अच्छे 'शिष्य' को प्रदान कर दी जाती थी। पाँचवें गुरु अर्जुनदेव ने सिखों को तीन चीजें दीं। प्रथम 'आदि ग्रंथ' के रूप में दी जिसमें पाँच गुरुओं तथा अन्य संतों की वाणी लिखी हुई है। दूसरी 'गुरुमुखी' लिपि जिसमें आदि ग्रंथ लिखा गया। और अंतिम 'हर मंदिर-साहब या गोल्डन टैंपल के लिए भूमि दी और उसको बनवाया। अमृतसर में 'अकाल तख्त' की उच्चत्तम गद्दी बनी जहाँ से सारे सिख समुदाय के लिए निर्देश जारी किये जाते थे। 1699 ई. में दसवें गुरु, गुरु गोविंद सिंह ने खालसा पंथ बनाया जिसका अर्थ 'पवित्र' होता है। इन्होंने सिखों को पाँच शपथ लेने के निर्देश दिए। ये नाम हैं–'केश' (लम्बे बाल तथा दाढ़ी) रखना, 'कंघा' 'कड़ा' (धातु की चूड़ी) 'कृपाण' (एक तलवार) तथा कच्छा (घुटने के कुछ ऊपर तक पहनने वाला अधोवस्त्र) परिणामस्वरूप ये प्रतीक सिख धर्म के चिह्न रूप में विख्यात हो गये। उन्होंने आगे कहा कि उनकी मृत्यु के बाद 'आदिग्रंथ' ही सिखों का गुरु होगा तथा उनको इस पवित्र ग्रंथ को प्रणाम करना होगा।

सिखधर्म में संगीत सदा एक महत्त्वपूर्ण घटक रहा है तथा वे विश्वास करते हैं कि संगीत के द्वारा कोई भी परम आनन्द या समाधि को प्राप्त कर सकता है।

टिप्पणी

पारसी धर्म (जोरोएस्ट्रियेनिज्म)

आठवीं-शताब्दी (ई.पू.) में जोरोस्टर या ज़रथुस्त ने पारसी धर्म की नींव रखी। वह अपने क्षेत्र में एकेश्वरवाद पर उपदेश देते थे जो अब 'पर्शिया' नाम से जाना जाता है। उन्होंने अग्नि की पूजा करनी सिखाई और अहुरमजदा तथा अहुरमान के रूप में अच्छाई और बुराई की पहचान कराई।

उन्होंने करुणा एवं दान के नैतिक सिद्धांतों की शिक्षा दी है। ये उपदेश 'जेन्द अवेस्ता' में संचित किए गए हैं।

जोरेस्ट्रियन 'ज़रथुस्त' धर्म पूरे पर्शिया में फैल गया और आठवीं शताब्दी तक यह एक प्रभावशाली धर्म बना रहा। ज्यादातर पारसी दुनिया के विभिन्न भागों में रहने चले गए। वे भारत में भी आए और गुजरात के नवसारी जिले में रहने लगे और बाद में भारत के करीब-करीब सभी भागों में फैल गए। उन्होंने भारतीय संस्कृति में बहुत योगदान दिया।

प्रसिद्ध राष्ट्रीय नेता ''दादाभाई नौरोजी'' पारसी थे जिन्होंने ब्रिटिश भारत के सभ्य बनाने के दावे को खोखला सिद्ध किया और उनको शोषण नहीं करने दिया।

एक अन्य उत्कृष्ट व्यक्ति थे जो पारसी समुदाय के थे। वे थे जमशेदजी टाटा जो एक प्रमुख भारतीय उद्योगपति थे। इन्होंने भारत में लौह एवं स्टील उद्योग की कठिन प्रतिस्पर्धा को झेलते हुए भी प्रतियोगिता की और इन्होंने उद्योग में सफलता प्राप्त की है। पारसी लोगों ने बड़ी संख्या में आम जन के लिए धर्मार्थ केंद्र खोले। ज़रथुस्त धर्म में धर्म परिवर्तन नहीं होता है तथा किसी भी परिस्थिति में नये प्रवेशों को नहीं स्वीकार किया जाता है।

इस प्रकार हम देख सकते है कि भारतीय संस्कृति निरन्तर नई आती हुई संस्कृतियों को अपने अंदर समाहित करती रही।

लोक कलाओं का विकास

ग्रामीण समूह को अनेक क्षेत्रों में अपनी रचनात्मक कौशल कुशलता को प्रस्तुत करने के अवसर प्राप्त हुए। कृषि संबंधी कार्य करते समय अनेक मौके इससे जुड़े हुए हैं उदाहरण स्वरूप भारतीय संस्कृति बहु-आयामी, बहुभाषायुक्त, बहुधर्मी होते हुए भी संयुक्त प्रकृति की बनी रही।

पाठगत प्रश्न 4.5

रिक्त स्थान भरिए–

1. ..... ने खालसा पंथ की स्थापना तथा पाँच शपथें नियत कीं।
2. ..... अग्नि की पूजा करते है, अच्छाई और बुराई में विश्वास करते हैं और दया, दान को बढ़ावा देते है।

टिप्पणी

4.11 दक्षिण भारत

नौवीं तथा ग्यारहवीं शताब्दी के बीच 'चोला' नामक राजवंश दक्षिण भारत के चोलामन्डलम्' राज्य में शासन कर रहा था। 'चोला' शासकों ने एक ताकतवर सेना और शक्तिशाली जलसेना का विकास किया। राजेंद्र चोला ने कुछ इण्डोनेशिया द्वीपों को जीत लिया था। इन्होंने ग्राम स्तर पर लोकतांत्रिक संस्थाओं को भी विकसित किया। जैन धर्म एवं बौद्ध धर्म भी इस राज्य में उन्नति कर रहा था। साहित्य, ललितकला, मूर्तिकला तथा धातु से निर्मित शिल्प आदि उनके संरक्षण में बहुत उत्तम स्तर के थे।

चौदहवीं शताब्दी में विजयनगर नामक नया राज्य बना, जो अब 'कर्नाटक' कहलाता है। इस राज्य की उत्तर दिशा में 'तुंगभद्रा' नदी के पार 'बहमनी' नाम से नया मुस्लिम (इस्लामिक) राज्य बना जो अब आंध्र-प्रदेश के नाम से जाना जाता है। 'बहमनी' और 'विजयनगर' राज्य समृद्ध 'रायपुर दाब' के ऊपर अपना प्रभाव बनाने के लिए एक दूसरे के विरुद्ध युद्ध करते रहते थे। 'चोलमन्डलम्' राज्य में तमिल भाषा लोकप्रिय थी। कर्नाटक में कन्नड़, आंध्र में तेलगु, केरल में मलयालम परन्तु सभी की लिपि भिन्न थी। ऐसा सम्भव है कि मूलत: सम्पूर्ण क्षेत्र ही तमिल बोलता था क्योंकि यह एक प्राचीन भाषा है। परन्तु मध्ययुग तक चारों भाषाएँ अपनी विशिष्ट पहचान बना चुकी थीं। चौदहवीं और सोलहवीं शताब्दी के बीच विजयनगर ने बहुत ऊँचाई प्राप्त की।

पन्द्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में कुछ विदेशी पर्यटकों ने जिन्होंने इन प्रदेशों का भ्रमण किया, यहाँ के राजा, शहर और लोगों की बहुत प्रशंसा की। हम्पी में प्राप्त विजयनगर के अवशेष भी संसार को आश्चर्यचकित कर देते हैं।

'चोलवंशीय राजाओं के समय' के मध्य 'कांची' शिक्षा का उच्च केन्द्र बन गई। 'विजयनगर' के सम्राटों ने भी कला ओर उसकी शिक्षा को संरक्षण प्रदान किया।

आपने क्या सीखा

- 1206 ई. -1526 ई. में प्रारम्भिक तुर्क शासक सुल्तान कहलाते थे क्योंकि वे खलीफ़ों के प्रतिनिधि के रूप में शासन करेंगे, ऐसा माना जाता था।
- मुगलों ने दिल्ली के सुलतानों की पदवी ले ली। उन्होंने संगीत, चित्रकला और वास्तुकला को संरक्षण दिया। 1707 ई. तक भारत में मजबूती से शासन किया। बहुत सारे भवन बनवाये। 1707 के बाद मुगल साम्राज्य कमजोर होने लगा और विघटित हो गया। इस अव्यवस्था में राजनैतिक शक्ति के रूप में 'ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कम्पनी' प्रकट हुई।
- सूफी सन्तों की दया, सहनशक्ति, सहानुभूति, समानता की विचारधारा ने भारतीय जनमानस पर गहरा प्रभाव पड़ा।

टिप्पणी

- चौदहवीं तथा सोलहवीं शताब्दी में भक्ति आंदोलन की दो मुख्य धाराएँ प्रवाहित हुईं–निर्गुण तथा सगुण।
- लोगों ने अपने क्षेत्रीय और स्थानीय लोकनृत्य और लोकसंगीत का विकास किया।
- विजयनगर के अवशेष कर्नाटक के हम्पी क्षेत्र में प्राप्त हुए हैं। आंध्र प्रदेश में बहमनी राज्य विकसित हुआ।
- भारतीय समाज इस समय चार प्रमुख वर्गों में विभाजित हो गया था– अतिसम्भ्रान्त वर्ग, पुरोहित वर्ग, नागरिक और कृषक वर्ग।
- दिल्ली में आयात और निर्यात सहित समस्त व्यापार केन्द्रित होकर फला फूला।
- इस्लाम का भारतीय समाज पर गहरा प्रभाव पड़ा। इस काल के दो प्रसिद्ध धार्मिक आन्दोलन हुए-सूफी और भक्ति आन्दोलन।
- सबसे महत्त्वपूर्ण सूफी सन्त थे– चिश्ती, फिरदौसी, निज़ामुद्दीन औलिया।
- कुछ प्रसिद्ध भक्ति सन्त थे– गुरुनानक, रामानुज, रामानन्द, कबीर, चैतन्य, मीरा बाई ओर नामदेव।
- मध्य काल में उर्दू का प्राकट्य हुआ। इस काल में दक्षिण में वर्तमान मराठी, तमिल, तेलगु, कन्नड़ और मलयालम तथा उत्तर में असमी, बंगाली, हिंदी या खड़ी बोली पंजाबी और गुजराती भाषाओं का उदय देखा जा सकता है।
- गुरु नानक ने सिखधर्म की स्थापना की। गुरु अर्जुन देव ने वर्तमान 'गुरुमुखी' लिपि 'आदिग्रंथ' और अमृतसर में 'हर-मंदिर' के लिए स्थान निर्धारित किया।
- आठवीं शताब्दी ईसा पूर्व में पर्शिया में जोरोएस्टर ने ज़रथ्रुस्त धर्म की स्थापना की।
- चोल शासकों ने बंगाल तथा इण्डोनेशिया के कुछ भागों पर विजय प्राप्त की। इन्होंने ग्राम्य स्तर पर लोकतान्त्रिक संस्थाओं को प्रारम्भ किया।
- काँची शिक्षा का महान केन्द्र बन गया।

पाठान्त अभ्यास

1. मध्यकाल में भारत की राजनीतिक स्थिति का वर्णन कीजिए।
2. हिन्दुधर्म पर इस्लाम के प्रभाव की विवेचना कीजिए।
3. भारतीय संस्कृति को समृद्ध बनाने में भक्ति आंदोलन की भूमिका का विश्लेषण कीजिए।
4. आधुनिक भारतीय भाषाओं के उदय पर टिप्पणी लिखें।
5. सिख धर्म और ज़रथ्रुस्त धर्मों का निरूपण कीजिए।

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

4.1 1. हिजरी संवत् का प्रारम्भ

2. रमजान के महीने में व्रत करना रोज़ा कहलाता है।

3. सूफी सन्त

4. अबुलफजल।

4.2 1. खुतबा

2. शेरशाह।

3. राजपूत।

4. वाइसराय लॉज

5. शाहजहाँ।

4.3 1. इस आंदोलन की दो मुख्य धाराएँ हैं–निर्गुणभक्ति और सगुण भक्ति।

2. नानक और कबीर (कोई एक) निर्गुण कवि, तुलसीदास और सूरदास (कोई एक) सगुण कवि।

4.4 1. गरबा, कालबेलिया, भांगड़ा (कोई दो)

2. फुलकारी–पंजाब में

चिकन–लखनऊ में (कोई एक)

4.5 1. गुरु गोविदसिंह

2. जोरोएस्ट्रियंज